ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

ताई

कक्षा - आठवीं

विषय – हिंदी
पाठ : २
पाठ का नाम : ताई
PPT-2

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

2 ताई

चिंतन-मनन

बच्चे प्यार के भूखे होते हैं। उनके साथ स्नेहपूर्वक व्यवहार करने से वे भी उसी प्रकार स्नेहपूर्ण व्यवहार करते हैं। वास्तव में नन्हे-मुन्ने भगवान के स्वरूप होते हैं।

1

"ताऊ जी, हमें लेलगाड़ी (रेलगाड़ी) ला दोगे?" कहता हुआ एक पाँच वर्ष का बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा। बाबू साहब ने दोनों बाँहें फैलाकर कहा, "हाँ बेटा, ला देंगे।" बालक को गोद में उठाकर उसका मुख चूमकर बोले, "क्या करेगा रेलगाड़ी का?"

बालक बोला, "उसमें बैठकर बली दूल जाएँगे। हम भी जाएँगे, चुन्नी को भी ले जाएँगे। पिता जी को नहीं ले जाएँगे। वे हमें लेलगाड़ी लाकर नहीं देते। ताऊ जी, तुम ला दोगे तो तुम्हें ले जाएँगे!"

बाबू साहब ने कहा, "और किसे ले जाएगा?"

बालक क्षणभर सोचकर बोला, "बछ औल किसी को नहीं ले जाएँगे।"

पास ही बाबू रामजीदास की अर्धांगिनी बैठी थीं। बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा, "और अपनी ताई को नहीं ले जाएगा?"

पाठ का आरंभ

(१)

शब्दार्थ

क्षण भर = समय का कुछ पल
अर्धांगिनी = पत्नी

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

बालक कुछ देर तक अपनी ताई को देखता रहा। ताई जी उस समय कुछ चिढ़ी हुई-सी बैठी थीं। बालक को उनके मुख का भाव कुछ अच्छा न लगा। वह बोला, "ताई को नहीं ले जाएँगे।"

ताई जी सुपारी काटती हुई बोलीं, "अपने ताऊ जी को ही ले जा। मेरे ऊपर दया रख!" ताई ने यह बात बड़ी रुखाई के साथ कही। बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरंत समझ गया। बाबू साहब ने फिर पूछा, "ताई को क्यों नहीं ले जाएगा?"

"ताई हमें प्यार नहीं करतीं!"

"जो प्यार करेंगी तो ले जाएगा?"

बालक को इसमें कुछ संदेह था। ताई का भाव देखकर उसे यह आशा नहीं थी कि वे प्यार करेंगी। बालक मौन ही रहा। बाबू साहब ने फिर पूछा, "क्यों रे, बोलता क्यों नहीं? ताई प्यार करें तो रेल पर बिठाकर ले जाएगा?" बालक ने ताऊ जी को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया परंतु मुख से कुछ नहीं कहा।

बाबू साहब उसे अपनी अर्धांगिनी के पास ले गए और बोले, "लो, इसे प्यार कर लो तो यह तुम्हें भी ले जाएगा।" परंतु बच्चे की ताई श्रीमती रामेश्वरी को पति की यह चुहलबाज़ी अच्छी न लगी। वे तुनककर बोलीं, "तुम्हीं रेल पर बैठकर जाओ, मुझे नहीं जाना है!"

बाबू साहब ने रामेश्वरी की बात पर ध्यान नहीं दिया। बच्चे को उनकी गोद में बिठाने की चेष्टा करते हुए बोले, "प्यार नहीं करोगी तो फिर रेल में नहीं बिठाएगा, है न मनोहर?"

मनोहर ने ताऊ जी की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उधर ताई ने मनोहर को अपनी गोद से धकेल दिया। मनोहर नीचे गिर पड़ा। शरीर पर तो चोट नहीं लगी, पर हृदय में चोट लगी। बालक रो पड़ा।

बाबू साहब ने बालक को गोद में उठा लिया, चूमकर-पुचकारकर चुप कराया और कुछ पैसे तथा रेलगाड़ी ला देने का वचन देकर छोड़ दिया। बालक मनोहर भयपूर्ण दृष्टि से अपनी ताई की ओर ताकता हुआ उस स्थान से चला गया।

मनोहर के चले जाने के बाद रामजीदास रामेश्वरी से बोले, "तुम्हारा यह व्यवहार कैसा है? बच्चे को धकेल दिया! अगर चोट लग जाती तो?" रामेश्वरी मुँह मटकाकर बोलीं, "लग जाती तो अच्छा होता, क्यों मेरी खोपड़ी पर लादे देते थे? आप ही तो उसे मेरे ऊपर डालते थे और आप ही अब ऐसी बातें करते हैं।"

बाबू साहब कुढ़कर बोले, "इसे खोपड़ी पर लादना कहते हैं?"

रामेश्वरी बोलीं, "और नहीं तो किसे कहते हैं? तुम्हें तो अपने आगे किसी का दुख-सुख सूझता ही नहीं।

(२)

शब्दार्थ

रूखाई = स्नेह का न होना ।

शुष्क = रूखा ।

चुहलबाजी = हँसी - मजाक ।

चेष्टा = कोशिश ।

कुढ़कर = चिढ़कर ।

जारी रहेगा...

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

न जाने कब किसका जी कैसा होता है। तुम्हें इन बातों की कोई परवाह ही नहीं, बस अपनी चुहल से काम है!"

बाबू साहब, "बच्चों की प्यारी-प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो ही जाता है। मगर तुम्हारा हृदय न जाने किस धातु का बना हुआ है!"

रामेश्वरी, "तुम्हारा हो जाता होगा। और, होने को होता भी है, मगर वैसा बच्चा भी तो हो! पराए धन से भी कहीं घर भरता है?"

बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले, "यदि अपना सगा भतीजा भी पराया धन कहा जा सकता है तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे!"

रामेश्वरी कुछ उत्तेजित होकर बोलीं, "तुम्हारा भतीजा है, तुम चाहे जो समझो लेकिन मुझे ये बातें अच्छी नहीं लगतीं। आदमी संतान के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं– पूजा-पाठ करते हैं, व्रत रखते हैं; पर तुम्हें इन बातों से क्या काम? रात-दिन भाई-भतीजों में मगन रहते हो!"

बाबू साहब के मुख पर घृणा का भाव छलक आया। उन्होंने कहा, "पूजा-पाठ, व्रत सब ढकोसले हैं। जो वस्तु भाग्य में नहीं, वह पूजा-पाठ से कभी प्राप्त नहीं हो सकती। मेरा तो यह अटल विश्वास है।" यह कहकर वे बाहर की ओर चले गए।

2

बाबू रामजीदास धनी आदमी हैं। कपड़े की आढ़त का काम करते हैं, ब्याज पर रुपया भी लेते-देते हैं। इनका एक छोटा भाई है। उसका नाम है कृष्णदास। दोनों भाइयों का परिवार एक ही मकान में रहता है। बाबू रामजीदास की आयु पैंतीस वर्ष के लगभग है और छोटे भाई कृष्णदास की छब्बीस वर्ष के लगभग। रामजीदास निःसंतान हैं। कृष्णदास की दो संतानें हैं। एक पुत्र– वही पुत्र, जिससे पाठक परिचित हो चुके हैं– और एक कन्या है। कन्या की आयु दो वर्ष के लगभग है।

(३)

शब्दार्थ

उत्तेजित = भड़ककर

ढकोसले = झूठा दिखावा

आढ़त = कमीशन लेकर काम बिकवाने का काम

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

संबंधित प्रश्न –

१. लेलगाड़ी ला दोगे ? किसने कहा?

२. हाँ , ला देंगे । किसने कहा?

३. मनोहर ने किसे न ले जाने की बात कही ?

४ . मनोहर के ताऊ जी और ताई जी का क्या नाम है?

५. ताई ने मनोहर को अपनी गोद से क्यों धकेल दिया ?

६. तुम्हारा यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा । किसने - किससे कहा?

७. क्यों मेरी खोपड़ी पर लाद देते थे ? किसने कहा?

८. बच्चों की प्यारी - प्यारी बातें सुनकर जी (मन) प्रसन्न हो जाता है। मगर तुम्हारा हृदय किस धातु का बता हुआ है । किसने और क्यों कहा?

९. पराया धन का अर्थ क्या होता है?

१०. पूजा पाठ , व्रत सब ढकोसला है । स्पष्ट कीजिए I

गृहकार्य - उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर H/W की कॉपी में लिखना ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow